International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आधुनिक हिन्दी प्रेम कहानियों के बदलते स्वरूप

Birendra Kisku

PhD Scholar, Hindi Department, Visva Bharati University , Santiniketan

शोध सारः

कोई भी साहित्यकार अपने समय व समाज की परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बनाते हुए रचनाएँ करता है। साहित्य हो या सिनेमा सृजन के ये सभी क्षेत्र एक तरफ तो समाज से प्रभावित होते हैं और समाज को प्रभावित भी करते हैं। साहित्यकार का ग्रहणशीलता और सृजनशीलता से गहरा संबंध होता है। अपने समाज और परिवार से वो ग्रहण करते हैं और वहीं देने की सार्मथ्य रखते हैं। सामाजिक भौतिक परिस्थितियाँ भी मानव जीवन को कईतरह से प्रभावित करती है। अतः हम इन सब के बावजूद भी प्रेम को निर्विकार रह जाने की उम्मीद कैसे करते। तात्पर्य है, इस कारण प्रेम का स्वरूप बदला है। प्रेम तो समाज सापेक्ष होती है और इसलिए प्रेम कहानियाँ भी समाज सप्पेक्ष होती है।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ से ही हिन्दी साहित्य में गद्य लेखन की परंपरा चल पड़ी थी। इसके बाद हिन्दी साहित्य में प्रेम कथाओं पर कई कहानियाँ तथा उपन्यास की रचनाएँ हुई। देवकीनंदन खत्री के अनमोल कृति 'चन्द्रकांता संतति' में राजा राजकुमारो की प्रेम कथाओं के साथ तिलिस्म ऐयारी की कहानियाँ गढ़ी गई और तब से लेकर हिन्दी कथा साहित्य ने सौ वर्ष के सोपान को पार कर चुकी। इसके साथ हिन्दी कहानियों में प्रेम का स्वरूप भी बदला है।

बीज शब्द : प्रेम कथा, प्रेम कहानी, उसे कहा था, त्याग और समर्पण, असफल प्रेम

मूल आलेख :

हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों में प्रेम पर आधारित अनेक कहानियाँ लिखी गयी। गद्यकाल के आरंभिक दौर से अब तक हिन्दी साहित्य के सौ वर्ष के सौपान को पार कर चुका। इस सौ वर्ष के अवधि में हिन्दी साहित्य के प्रेम कहानियों के विविध स्वरूप हमें देखने को मिलता है। गद्यकाल के आरंभिक दौर में ही देवकीनंदन खत्री जैसे उपन्यासकार साहित्यिक कर्म में सक्रिय थे। उन्होंने राजा महाराजा तथा राजकुमार के प्रेम कथाओं पपर उपन्यास की रचना की। चन्द्रकांता संतति उनकी अनमोल कृति है। यह कर्त्तव्य, प्रेम, ईर्ष्या और द्वेष जैसे भावों को तिलिस्म एवं ऐयारी में पिरोकर प्रस्तुत की गई एक अनोखी कहानी।

हिन्दी के गद्यकाल साहित्य के प्रारंभिक दौर में हमें त्याग और बलिदान पर केंद्रित प्रेम कहानियाँ लिखी गयी। भारत की स्वतंत्रता के बाद देश की सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक परिवेश में जिस तरह बदलाव आया जिसने भारतीयों के जीवन मूल्यों, नैतिकता, आदर्श तथा विचारों को बदल डाला। इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से हमारे आधुनिक हिन्दी साहित्य में भी दिखाई पड़ता है। गद्यकाल के प्रारंभिक दौर में प्रेम कहानियों में उन उदान्त मूल्यों का समावेश है जहाँ प्रेम में दो प्राणी के बीच निस्वार्थ, निश्छलता की भावना होती है। आज, कहानियों में ऐसी उदान्त भावों का लोप हो गया है।

स्वतंत्रयोत्तर भारत में भारतीय सत्ता, समाज भले ही अंग्रेजों के चंगुल से छुटकारा पाया हो लेकिन पाश्चात्य संस्कृति की छाप से भारतीय समाज ने स्वयं को मुक्त नहीं कर पाया। इसका प्रमाण यह है कि उपभोक्तावादी संस्कृति आज भारतीयों के जीवन, विचार, मानसिकता तथा कार्यशैली में स्पशेली में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। निश्चय ही इसका, प्रभाव दो प्राणी के बीच प्रेम जैसे कोमल थानों पर पर पड़ा, अंततः हिन्दी साहित्य और प्रेम कहानियों पर भी तभी तो आज तक हिन्दी साहित्य में 'उसने कहा था' जैसी कहानियाँ विरले ही मिलेंगे। कारण स्पष्ट है– सामाजिक, संदर्भो में मूल्य बदल रहे और मूल्यों के संवेदना भी। इस बदलाव ने ही कहानियों की अंत वस्तु में भी बदलाव लाया।

मानवीय अस्तित्व के मूल में ही प्रेम है। यह एक गहन निर्भरता की भावना के रूप में जो सभी मनुष्य में विद्यमान है। व्यक्ति चाहे कितना भी योग्य तथा कुशल क्यों न हो, एकांत अकेले छोड़ दिया जाए तो वह जी नहीं सकता। एक दूसरे पर निर्भरता ही प्रकृति का नियम है। जब मनुष्य के जीवन में सब कुछ विपरीत परिस्थितियाँ, लोग, आसपास का वातावरण या हवाएँ, आपके अपने करीबी, लेकिन प्रेम की अनुभूति मात्र मिल जाय, तो जीने की ताकत देता है।

हिन्दी कहानी के प्रारंभिक स्वरूप में प्रेम की पवित्रता की रक्षा की जाती थी। स्त्री पुरूष दोनों में त्याग, समर्पण की प्रवृति होती थी, प्रेम की श्रेष्ठता ही प्रेम की वास्तविकता सार्थकता समझी जाती थी। इस दृष्टि से 'उसने कहा था' सभी प्रेम कहानियों में उच्च कोटि की रचना है, जहाँ बालपन के आकर्षण से उपजे प्रेम कालांतर में शौर्य, त्याग और बलिदान का मिसाल प्रस्तुत करता है। गुलेरी जी ने इस प्रेम कहानी के माध्यम से प्रेम को जिस ऊँचाई व गहराई में ले गया, वह उसके पूर्व में न था। 'उसने कहा था' में प्रेम नायक नायिका

पक्ष आदश प्रेम की स्थापना करता है, जो तात्कालीन सामाजिक मूल्यों में से एक था। तब के प्रेम में आज का 'गिफ्ट कल्चर' देखने को नहीं मिलता। जिस समय की यह कहानी है, इस समय त्याग और समर्पण ही प्रेम का मूल था। एक और जहाँ सूबेदारनी बालपन के प्रेम पर अडिग विश्वास जमाये बैठी है तो दूसरी ओर लहना सिंह बचपन के कुछ संवाद को ही उसकी प्रेम की थाली है।

'उसने कहा था' के बाद कालांतर में अनेक हिन्दी की प्रेम कहानियों की रचनाएँ हुई। उनमें राम संजीवन की प्रेम कथा परिंदे कोसी का घटवार, दूसरा ताजमहल, ऐसा भी होता है, चुप्पी की धुन इत्यादि। हिन्दी प्रेम कहानियों के अध्ययन तथा विश्लेषण के दौरान इन कहानियों नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

लेखिका चन्द्रकांता हिन्दी के अंग्रेजी स्त्री कथाकारों में से एक है। उन्होंने भी प्रेम कथाओं पर कई रचनाएँ की है, मुख्यतः उनकी कहानियाँ जिन्हें यहाँ इस संदर्भ में चर्चा किया जा सकता है। प्रेम कथाओं पर आधारित उनकी कहानियाँ निम्न है– ना सोहणी ना हीर, ऐसा भी होता है, चुप्पी की धुन, अनार के फूल, विरासत बावजूद इसके आदि।

प्राचीन काल की आपने कई अमर कथाएँ सुनी होगी, लैला–मजनू, हीर रांझा, सोहणी–माहिवाल, रोमियो–जुलियट आदि।

इन प्रेम कथाओं में नायक नायिका एक दूसरे को पाने के लिए तमाम तरह की सामाजिक कष्ट, तिरस्कार झेलते हैं। अपने प्रेम के लिए मर मिटने या शहीद होने को तैयार हैं। धर्म, जाति, नस्ल, वर्ग की बेड़ियों को तोड़कर एक दूसरे पर समर्पित है। ऐसी परिस्थिति में कई बार उनकी प्रेम कहानी असफल व अधूरी होने के बावजूद भी मिसाल प्रस्तुत करती है, इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है।

आज के संदर्भ में प्रेम कथाओं के नायक, नायिका अपने प्रेम के लिए मर मिटने या शहीद होने के बजाय साथ जीवन जीने को बड़ी चुनौती मानते हैं। आज हम लैला–मंजनू या सोनी माहिवाल की प्रेम कथाओं वाले दौर में नहीं है। तभी तो चन्द्रकांता रचित 'न सोहणी न हीर' कहानी की नायिका उर्वशी कहती है– **"माँ! मैं सोहणी, लैला, हीर नहीं कि मर मिटकर शहीद हो जाऊँ। आपकी बेटी उर्वशी हूँ, जिसे जीना ज्यादा कड़ी चुनौती लगता है।"**[1] परिवार के विरूद्ध नायिका उर्वशी युसुफ से विवाह कर घर बसाना चाहती है। बेटी के मुस्लिम युवक के साथ प्रेम विवाह की खबर और घर छोड़कर भागने के कारण पिता के सनातन विश्वास को गहरा आघात पहुँचता है। इस तरह सामाजिक बेड़ियों तथा तिरस्कार के बावजूद नायिका उर्वशी अपने प्रेमी युसुफ के साथ जीने का चुनाव करती है। यहाँ आज की इक्कीसवीं सदी की आधुनिक आत्म निर्भर सशक्त नारी का चित्रण है जो परिवार, समाज तथा सामाजिक बेड़ियों सामने नहीं झुकती। कदाचित वो अपने प्रेम को जख्म बनाकर पोसेग्री क्योंकि उर्वशी की माँ ने भी कभी प्रेम किया था तभी तो उर्वशी कहती है – **"आपने प्यार को जख्म बनाकर पोसना सीखा है। मैं बलि का बकरा नहीं बनना चाहती"**[2] तात्पर्य है कि प्यार को कुर्बान नहीं करना चाहती। वह उसको पाना चाहती है चाहे राह में किसी तरह बाधा आ जाय।

नायिका उर्वशी के प्रेम में नायक के मुस्लिम होने पर यहाँ अंतरधार्मिक प्रेम संबंध की समस्या उत्पन्न हुई है। आज के युग में अंतर धार्मिक, अंतर जातीय विवाह का प्रचलन बढ़ है। आधुनिक युवा पीढ़ी अपने पढ़ाई, नौकरी व्यापार के सिलसिले में गृहनगर छोड़कर महानगरों में बसते हैं। अपने कार्यस्थलों में विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग नस्ल के युवक युवतियाँ दूसरे के संपर्क में आते हैं, उनकी ये घनिष्ठता प्रेम एवं अंततः विवाह में परिणत होते हैं। इस तरह आधुनिक समाज में अंतरजातीय अंतरधार्मिक, अंतरनस्लीय प्रेम विवाह का प्रचलन बढ़ा है। तमाम सामाजिक बेड़ियों और तिरस्कार को दरकिनार युवक युवतियाँ अपने पसंद की जीवन साथी का चुनाव करते हैं। चन्द्रकांता की कहानी 'विरासत' में ब्राह्मण कुल में जन्म वीरा मुस्लमान स्त्री जेबा को ब्याह कर घर लाता है किंतु माता पिता जेबा के मुस्लमान होने पर बहु के रूप में नहीं स्वीकरते। इस तिरस्कार के बाद वीरा पत्नी जेबा के साथ शहर लौटता है। पिता बेटे वीरा को जायदाद की वारिस बनाने की शर्त तय करता है – **"तुम उस औरत को छोड़ दो तो घर आकर खेत बघार संभाल सकते हो। तुम्हें अपनी सारी जायदाद का वारिस बनाने को तैयार है।"**[3] इस तरह जायदाद के प्रलोभन के बावजूद भी नायक वीरा आजन्म जेबा का साथ निभाता है। यहाँ इस प्रेम कथा में नैतिकता विजय होती है। नायक वीरा धन–जायदाद से ऊपर अपने प्रेम को चुनता है।

अंतर जातीय या अंतर धार्मिक प्रेम विवाह हमेशा सुखदायी भी नहीं होती। 'अनार के फूल' जब हिन्दु कन्या नीरा का विवाह मुस्लमान युवक नसीर से होती है। दोनों के परिवार वाले असंतुष्ट थे। विवाह के बाद ससुराल में नीरा को सास द्वारा इस्लामिक तौर तरीके अपनाने का दवाब दिया जाता एवं प्रताड़ना दी जाती है। इस तरह से परिवार समाज, विरादरी वाले प्रेमी जोड़े के मन में प्रस्फूटित होने वाले प्रेम रूपी 'अनार के फूल' को खिलने नहीं देते।

प्रेम कभी तात्कालिक प्रसंग होता है तो कभी किसी के लिए जीवन मृत्यु का प्रश्न बन जाता है। प्रेम पूर्णतः विस्मृत हो जाए यह असंभव है किंतु समय की परतें उसे धुंधला करने चुक जाय, वहाँ स्थिति प्रायः भयंकर या कष्टप्रद हो जाती है। कहा जाता है कि वक्त हर जख्म भर देती है, किंतु जिस जख्म को वक्त भी न भर सके उसकी भयावहता का अंदाजा लगाया जा सकता है।

निर्मला वर्मा की परिंदे तथा चंद्रकांता की 'ऐसा भी होता है'– दोनों ही कहानी में स्मृतियों में जीवित प्रेम की है। दोनों काहनी में संवेदना की साम्यता है तो परिस्थिति की भिन्नता भी। परिंदे की कथानायिका लतिका अपने प्रेमी कैप्टन गिरीश नेगी के स्मृतियों में बाकी जीवन व्यतीत करती है, वहीं ऐसा भी होता है, की रूक्मा प्रेमी अविजित की स्मृतियों में बाकी जीवन व्यतीत करती है। कैप्टन गिरीश नेगी के प्लेन दुर्घटना में मौत के बाद लतिका को हयूबर्ट जैसे चाहनेवाला मिलता है, लेकिन वह हमबर्ट के उसके प्रति प्रेम को गंभीरता से नहीं लेती क्योंकि सच्चा प्रेम तो जीवन में एक ही बार होती है। लतिका और रूक्मा दोनों ही अतीत में लौट नहीं सकती लेकिन उन्हें प्रिय है क्योंकि उस अतीत के साथ ढेर सारी संजोयी स्मृतियाँ है जीवन की सार्थकता है। यह जानकर भी कि वह जीवन

के लक्ष्य को प्राप्त न कर पायेगी फिर भी जीविषा उसे प्रेरित है। लतिका को लगता है – **"जो याद करती है, वही भूलना भी चाहती है, लेकिन सचमुच भूलने लगती है तब उसे भय लगता है कि जैसे कोई उसकी चीज किसी चीज को हाथो से छीने लिये जा रहा है, ऐसा कुछ जो सदा के लिए खो जाएगा।"**[4]

इन दो कहानियों में परिस्थितियों का फर्क साफ है– परिंदे की लतिका जीवन में 'मूव ऑन' नहीं करती, वहीं रूक्मा असफल प्रेम होने पर विवाह कर पारिवारिक दायित्वों को संभालते हुए भी स्मृतियों में प्रेम की उजास को जीवित रखती है। अविजीत ने रूक्मा के प्रति प्रेम का इजहार किया था। **"रूक्मा तुझसे मिलना बहुत अच्छा लगा उम्र भर तुम्हारे साथ बीते पलों को भूल नहीं पाऊँगा। पहाड़ी झरने सी तुम रूक्मा। तुमने मेरी प्यासी रूह को सराबोर कर दिया...... तुम मेरा पहला प्यार हो रूक्मा।"**[5] हालांकि इसके बावजूद भी अविजीत रूक्मा से मिलने दुबारा नहीं आया।

हिन्दी के कथाकारों ने असफल व अधूरी प्रेम कहानियों में नियतिवाद की परंपरा को भी बनाई रखी है। नियतिवादी दृष्टिकोण में नायक नायिका अधूरे व असफल प्रेम के लिए जो जैसा है, उसे वैसा रहने दो या जो बीत गया है, उसे जाने दो की स्थिति को स्वीकारते हैं। तात्पर्य है कि असफल प्रेम के अतीत के दुखड़ा रोने के बजाय एक नई जिंदगी की शुरूआत की प्रेरणा मिलती है।

शेखर जोशी की 'कोसी का घटवार' तथा चन्द्रकांता की 'बावजूद इसके' दोनों कहानियों में नियतिवाद है। दोनों ही कहानियों में नायक–नायिका की प्रेम असफल व अधूरी रहती है। परिस्थितिवश उनके प्रेम, विवाह परिणत नहीं हो पाती है। दोनों ही कहानियों में नायक नायिका का मिलन वर्षो बाद आता है। 'कोसी का घटवार' में नायक मुसाई का प्रेमिका लछया से वर्षो बाद मिलन होता है। मिलन के बीच समय का अंतराल पसरा रहता है। दोनों वर्तमान में अकेले हैं किंतु अतीत को कुरेदने का प्रयत्न नहीं करते। दोनों अपने भाग्य को स्वीकार कर चुके हैं। 'बावजूद इसके' में नायक नायिका शरद–नंदी का मिलन वर्षो बाद होता है। नंदी विवाह कर पारिवारिक दायित्व निभाती है, लेकिन उसका मन का एक हिस्सा अब भी शरद के पीछे भटकता है। शरद नंदी को सांत्वना देते हुए भाग्य को स्वीकारने और ए नई जिंदगी शुरूआत करने की प्रेरणा देते हैं– **"जो हो सकता था, हुआ नहीं उस पर दुखी मत हो नंदी, रोनेवाली लड़की बूढ़ी बेबस नजर आती है। रोनेवाला हर धुंधला देखता है। आज हम सालों बाद मिले .... तुम मानती हो मानती ही रहोगी, देवी बनने का ढोंग मत करो।"**[6]

प्रेम कहीं स्वच्छंद एहसास है तो कहीं दायित्व भी। प्रेम किसी भी उम्र में प्रस्फूटित हो सकता है। जैसे बालपन के आकर्षण पर उपजे प्रेम 'उसने कहा था' तो हमने पढ़ा है उसी प्रकार युवावस्था के आकर्षण से उपजी प्रेम का चित्रण चंद्रकांता की कहानी 'चुप्पी की धुन' में है। यहाँ प्रेम का जो स्वरूप है वो बिल्कुल उनमुक्त है, एक स्वच्छंद अहसास के रूप में। यहाँ प्रेम को संबंधों में नहीं बदल सकते। **"हर रिश्ते को नाम देना जरूरी नहीं।"**[7] प्रेम की इस उनमुक्त अहसास पर सिर्फ बात ही कर सकते। इसमें किसी निष्कर्ष तक पहुँचना संभव नहीं। 'चुप्पी की धुन' का कथानायक संजल प्रेमी होते हुए भी प्रेमिका ख्याति को प्रेम करना सिखाता है। प्रेम यहाँ अनुभूति की चीज है जो नायक नायिका को एक दूसरे का संगत पाकर मिलती है। दो प्राणी इस अहसास को पीकर सांसारिक दायित्वों से मुक्त होते हैं। कथानायक सजल बोहेनियन किस्म का युवक है जो प्रेम के संबंध में दार्शनिक दृष्टि रखता है। उनका मानना है प्रेम को विवाह संबंधो में न बदलो। **"विवाह बांधता है ख्याति, प्रेम मुक्त करता है। प्रेम को प्रेम ही रहने दो, उसे बांधो मत।"**[8] वैवाहिक जीवन में पारिवारिक दायित्व बोझ से अब, बोरियल या तनाव उत्पन्न हो तो जीवन एक नई संगत की तलाश में भटकती है। प्रौढ़ावस्था में प्रस्फूटित प्रेम इसी का नतीजा है। ऐसी ही प्रेम कथा है नासिरा शर्मा कृत 'दूसरा ताजमहल' जहाँ प्रौढ़ावस्था में प्रस्फूटित प्रेम का दार्शनिक चित्रण है। विवाहित अधेड़ स्त्री–पुरूष एक दूसरे के प्रेम में पड़ जाते हैं। पेशे से इंटीरियर डेकोरेटर नैना अकेलेपन में संगति ढूंढ़ती उसका संपर्क आर्किटेक्ट रवि भूषण से होती है। कुछ चंद मुलाकातों और फोन की बातों की सिलसिला होते प्रेम संबंध में बदल जाता है। प्रौढ़ावस्था में उपजे प्रेम पेशेवर तथा पारिवारिक दायित्वों के तले बोझ के कारण प्रेम जैसे कोमल तत्वों से वंचित होने के कारण होता है। इस कारण स्त्री पुरूष एक दूसरे में पूर्णता चाहते हैं।

कदाचित ही यहाँ स्त्री पुरूष के बीच बनया प्रेम निवाहेत्तर संबंध है जो अनैतिक मालूम पड़ता है। लेकिन प्रेम में सही गलत का निर्णय करना भी सरल नही रह जाता। यहाँ नायना और रवि के बीच प्रेम कब तक रहेगी, लेकिन इससे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि इस प्रेम के अहसास से प्रौढ़ हो चुकी नयना के मन में नया रोमांच और जवानी भर देता है, तभी तो रवि से मिलने के पहले एक किशोरी की तरह अपना रूप सौंदर्य को निहार लेती है। यहाँ स्त्री की प्रबल कामना व्यक्त होती है कि तमाम उम्र पत्नी या माँ के रूप में जीने के बाद क्यों न एक पल स्वयं के लिए उनमुक्त होकर जीये। मन की हर कामनाओं को पूरी करें। कुल मिलाकर यह कहानी यह संदेश देने में सफल होती है कि– **"प्यार किसी भी उम्र में हो उसका अपना तर्क होता है, जो उम्रत्र जापात, धर्म, भाषा की सारी दीवारों को गिरा देने की शक्ति अपने में रखता है।"**[9]

'दूसरा ताजमहल' और 'चुप्पी की धुन' दोनों ही कहानी में सहचर्य जन्म प्रेम है। हिन्दी के कथाकारों ने सहचर्य जन्म प्रेम को मुख्यतः अकस्मान ही उत्पन्न होने वाला वासनायुक्त प्रेम से अलग रखा है। जब दो प्राणी एक दूसरे के संपर्क में आते हैं। समय के साथ ही दोनों के बीच मैत्री तथा प्रेम संबंध का विकास होता है, निरंतर बातचीत और संगत से सहचर्य जन्म प्रेम है। ऐसे प्रेम कहानियों में एकतरफा संबंध नहीं पनपता। यहाँ नायक नायिका एक दूसरे की भावनाओं को अच्छी तरह समझते या परखते हैं।

शुक्ल जी ने सहचर्यजन्य प्रेम को अधिक पहत्व देते हैं। वे कहते हैं – **"प्रेम काव्यों के प्रायः रूप लोभ ही प्रेम का प्रवर्तक दिखाया जाता है और उसका प्रेमी बन जाता है। पर प्रेम का एक और कारण जो गुण से सर्वथा स्वतंत्र और उनकी अपेक्षा अधिक निश्चित**

प्रभाव वाला होता है, सहचर्य।..... इस तरह सहचर्यरात प्रेम में विशेषता यह होती कि इनका वेश सहचर्य काल से कुछ कुछ अवसरों पर ही रह रह कर व्यक्त होता है, पर विच्छेद काल में बराबर उमड़ा रहता है।''[10]

आकस्मिक रूप से अपने प्रेम किसी के रूप सौंदर्य देखकर होता है। ऐसे प्रेम को हम सहचर्यजन्य प्रेम नहीं बल्कि वासनायुक्त प्रेम कहेंगे। ऐसे प्रेमभाव आकस्मिक ही उत्पन्न होती है यों कहे कि प्रथम दृष्टि में किसी के रूप सौंदर्य देखकर उत्पन्न होती है। 'कानों में कंगना' ऐसे ही वासनायुक्त प्रेम पर आधारित कहानी है, जहाँ नायिका किरण के सच्चे, सरल व सहज प्रेम को नकार कर वासनामय प्रेम की ओर आकृष्ट नायक नरेन्द्र की यह प्रेम कहानी कहीं न कहीं स्त्री विरोधी मालूम पड़ती है। किरण का प्रेम अपूर्व सहज सरल रूप है, छल प्रपंच से कोसो दूर। किंतु नरेन्द्र सरल सहज प्रेम के स्थान पर चकाचौंध में फंसता है। अतः हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि प्रेम का यह स्वरूप एकतरफा और मन का भटकाव है।

''हिन्दी के प्रारंभिक कहानियों में कथानक का विकास आकस्मिक वदैवी घटनाओं पर निर्भर करता था। विकास युग में यह कथा विकास चरित्रों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं द्वारा होने लगा।''[11]

गुलेरी जी की 'उसने कहा था'' के ठीक बाद ही प्रसाद ने भी अपने कुछ कहानियों में प्रेम का चित्रण करते हैं। प्रसाद अपने सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक प्रसंगों पर आधारित रचनाओं के लिए जाने जाते हैं। उनके कथा के पात्र समाज के लिए प्रेरणास्रोत चरित्रवान और आदर्श गुणों से संपन्न युवक युवती होते हैं जो कर्त्तव्य के लिए न्योछावर हो सकते हैं। वहीं प्रभाव उनके प्रेम कहानियों में भी दिखाई पड़ता है।

प्रेम के संबंध में कहा जाता है कि प्रेम में मनुष्य अंधा हो जाता है, किंतु प्रसाद की यह विशेषता है कि उनके पात्र प्रेम में होकर भी अपने कर्त्तव्यों और नैतिकता के प्रति सचेत रहते हैं। फिर चाहे 'पुरस्कार' की नायिका मधुलिका हो आकाशदीप की चंपा। जयशंकर प्रसाद उस धारा के लेखक है जो आदर्श प्रधान प्रवृति से प्रेरित होकर भाव सत्य को उद्घाटित करते हैं।

प्रसाद कृत 'आकाशदीप8 कहानी में आंतरिक भरवों का द्वंद्व है। कहानी की नायिका चम्पा की बुद्धि जिसे शत्रु समझती है, उसका हृदय उसे ही प्रिय मान बैठा है। यद्यपि कहानी के अंत में चम्पा अपने बुद्धि का साथ देती है किंतु पूरी कथा में वह अपने हृदय को अपेक्षित नहीं कर पाती है। प्रसाद अपनी रचनाओं में सामाजिक मूल्यों को प्रश्रय अवश्य देते हैं। प्रेम संबंधों में वे त्याग को सर्वाधिक महत्व देते हैं तभी तो 'आकाशदीप' में चम्पा जिस बुद्ध गुप्त के लिए प्राण दे सकती है, उसी का त्याग करती है, क्योंकि चम्पा प्रेम और कर्त्तव्य के द्वंद्व में फंसी रहती है और अंततः कर्त्तव्य को चुनती है। तात्पर्य है कि यहाँ प्रेम पर कर्त्तव्य हावी हो जाती है। इस प्रकार हमने गद्यकाल के सौ वर्ष के अवधि में प्रेम कहानियों में प्रेम के विभिन्न स्वरूप को देखा। प्रेम का स्वरूप आगे भी सामाजिक संदर्भ के अनुसार बदलता रहेगा।

निष्कर्ष :

हमने देखा कि गद्यकाल के सौ वर्ष के अंतराल में हिन्दी साहित्य में ढेर सारी प्रेम कथाओं की रचनाएँ हुई। सन् 1916 में प्रकाशित गुलेरी जी थी 'उसने कहा था' जैसे त्याग और बलिदान पर आधारित प्रेम कहानी में अब तक की प्रेम कहानियों में प्रेम की विविध स्वरूप से हम परिचित हुए। तात्कालीन सामाजिक संदर्भो के अनुरूप ही प्रेम कहानियों की रचनाएँ हुई। उपभोक्तावाद संस्कृति ने भारतीय समाज को सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर बदलाव लाया। इसका प्रभाव भारतीय भारतीयों तथा उनके मनन चिंतन और साहित्य पर पड़ा। इस तरह देश की सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक बदलाव ने साहित्य रचने की प्रक्रिया को प्रभावित किया।

बदलते परिवेश और आधुनिक संदर्भो के कारण ही प्रेम का स्वरूप बदला और प्रेम कहानियों की अंतर्वस्त थी। इस तरह आज आधुनिक समय में 'उसने कहा था' जैसे अदर्श प्रेम कहानियों कीी रचनाएँ नहीं होती। आज की आधुनिक कहानियों में त्याग और बलिदान के स्थान पर वासना ग्लैमर की चकाचौंध और गिफ्ट कल्चर होती है।

आज के युवा पीढ़ी भोगवादी युग में जी रहे। अतः उनके प्रेम में भी भोग और वासना की गंध है। आज हम लैला–मजनू, हीर–रांझा, सोहणी–माहिवाल या रोमियो–जुलियट वाला दौर में नहीं है। प्रेम में जन्म जन्मांतर की बातें, दूर की व्यर्थ की बातें, अब तो एक जीवन में पूरी निष्ठा से प्रेम निभाना भी कठिन। आज के प्रेमी प्रेमिका भी प्रेम के लिए मर मिटने या शहीद होने के बजाय साथ जीना चाहते हैं। जीना ही उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती। इस तरह यहाँ इस शोध आलेख में प्रेम कहानियों के विभिन्न स्वरूपों – आदर्श प्रेम कहानियाँ (उसने कहा था, आकाशदीप), असफल और अधूरी प्रेम कहानी (बावजूद इसके, कोसी का घटवार), स्मृतियों में जीवित प्रेम कहानियाँ (परिंदे ऐसा भी होता है) वासनायुक्त प्रेम कहानी (कानों में कंगना), प्रौढ़ावस्था में प्रस्फूटित प्रेम (दूसरा ताजमहल) से परिचित हुए। भविष्य में भी प्रेम कहानियों की स्वरूप बदलती जाएँगी।

संदर्भ सूची :–

1ए चन्द्रकांता, बदलते हालात में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–61
2ए चन्द्रकांता, बदलते हालात में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–61
3ए चन्द्रकांता, पोशनूल की वापसी, अमन प्रकाशन कानपुर, द्वितीय संस्करण (2021), पृष्ठ सं0–94
4ए संपा–भीष्म साहनी, हिंदी कहानी संग्रह, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–252

5ए चन्द्रकांता, बदलते हालात में, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ सं0—53

6ए चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, अमन प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ सं0—73

7ए चन्द्रकांता, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल पेपरबैंक, दिल्ली, पहला संस्करण (2021) पृष्ठ सं0—115

8ए चन्द्रकांता, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल पेपरबैंक, दिल्ली, पहला संस्करण (2021) पृष्ठ सं0—116

9ए नासिरा शर्मा, प्रतिनिधि कहानियाँ, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण (2013), पृष्ठ सं0—53

10ए रामचंन्द्र शुक्ल, चिंतामणि—I, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृष्ठ सं0—95

11ए डॉ0 रामचंद्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर, पृष्ठ सं0—294